रैदास

रैदास नाम से विख्यात संत कवि रविदास का जन्म बनारस में सन् 1388 में और निर्वाण बनारस में ही सन् 1518 में हुआ, ऐसा माना जाता है । इनकी ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था । मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है । कबीर की तरह रैदास भी संत कोटि के कवियों में गिने जाते हैं । मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में रैदास का जरा भी विश्वास न था । वह व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे ।

रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है । रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं । सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं । इनका आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं । रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी सम्मिलित हैं ।

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं । पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है । उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता, बल्कि उसके अपने अंतस् में सदा विद्यमान रहता है । यही नहीं, वह हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है । इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है ।

दूसरे पद में कवि निर्गुण भक्ति की सार्थकता सिद्ध करते हुए सगुण भक्ति और कर्मकांड की निरर्थकता बताता है । कवि की नजर में ईश्वर की पूजा-अर्चना के लिए चढ़ाए जाने वाले फल-फूल-जल अनूठे नहीं हैं । वे जूठे और गँदले हैं । इसलिए कवि पूजा-अर्चना के कर्मकांड में न पड़कर मन-ही-मन ईश्वर की पूजा करता है और अपने भीतर ही ईश्वर के सहज स्वरूप की छवि बनाता है ।

(१)

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी ।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती ।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

(२)

राम मैं पूजा कहाँ चढ़ाऊँ । फल अरु मूल अनूप न पाऊँ ।।
थनहर दूध जो बछरू जुठारी । पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ।।
मलयागिरी बेधियो भुअंगा । विष अमृत दोऊ एकै संगा ।।
मन ही पूजा मन ही धूप । मन ही सेऊँ सहज सरूप ।।
पूजा अरचा न जानूँ तेरी । कह रैदास कवन गति मेरी ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. रैदास ईश्वर की कैसी भक्ति करते हैं ?
2. कवि ने 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' क्यों कहा है ?
3. कवि ने भगवान और भक्त की तुलना किन-किन चीजों से की है ?
4. कवि ने अपने ईश्वर को किन-किन नामों से पुकारा है ?
5. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
6. पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, यथा - पानी-समानी, मोरा-चकोरा । इस पद के अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखें ।
7. ''मलयागिरि बेधियो भुअंगा । विष अमृत दोऊ एकै संगा ।'' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें ।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –
   (क) जाकी अँग-अँग बास समानी
   (ख) जैसे चितवत चंद चकोरा
   (ग) थनहर दूध जो बछरू जुठारी
9. रैदास अपने स्वामी राम की पूजा में कैसी असमर्थता जाहिर करते हैं ?
10. कवि अपने मन को चकोर के मन की भाँति क्यों कहते हैं ?
11. रैदास के राम का परिचय दीजिए ।
12. 'मन ही पूजा मन ही धूप । मन ही सेऊँ सहज सरूप ।' का भाव स्पष्ट करें ।
13. रैदास की भक्ति भावना का परिचय दीजिए ।
14. पठित पद के आधार पर निर्गुण भक्ति की विशेषताएँ बताइए ।
15. 'जाकी जोति बरै दिन राती' को स्पष्ट करें ।
16. भक्त कवि ने अपने आराध्य के समक्ष अपने आपको दीनहीन माना है । क्यों ?
17. 'पूजा अरचा न जानूँ तेरी' कहने के बावजूद कवि अपनी प्रार्थना क्षमा-याचना के रूप में करते हैं । क्यों ?

कविता के आस-पास

1. पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए ।
2. भक्त कवि कबीर, नानक, नामदेव, मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए ।
3. रैदास के समकालीन कवियों की जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।

4. संकलित पदों के आधार पर रैदास के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्‌भाव संबंधी विचारों पर एक निबंध लिखिए ।
5. रैदास विविध कर्मकांडों में ईश्वर को न खोजकर स्वयं में ईश्वर की छवि बनाते हैं । आप ईश्वर को किस रूप में देखते हैं ? इस पर अपने विचार व्यक्त करें ।

भाषा की बात

1. पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं । ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए - यथा : दीपक - बाती
2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   पानी, चंद्रमा, रात, मीन, भुअंग

शब्द निधि

बास	:	गंध	दासा	:	दास, सेवक
समानी	:	समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)	जाकी	:	जिसकी
			अरु	:	और
घन	:	बादल	सोनहिं	:	सोना
मोरा	:	मोर, मयूर	मूल	:	कंद-मूल
चितवत	:	देखना, निरखना	अनूप	:	अनुपम, अद्वितीय
चकोर	:	तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है	थनहर	:	थान का दूध
			जुठारी	:	जूठा करना
			पुहुप	:	पुष्प
बाती	:	बत्ती, रूई या पुराने कपड़े को ऐंठकर बनाई हुई पतली पूनी जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं	भँवर	:	भौंरा
			बिगारी	:	बिगाड़ना, विकृत करना
			बेंधियो	:	विंधना, छेद करना
			भुअंगा	:	साँप
जोति	:	ज्योति, देवता की प्रसन्नता के लिए जलाया जानेवाला दीपक	सेऊँ	:	सेवा करना
			मीन	:	मछली
बरै	:	जलना, प्रकाशित होना	कवन	:	कौन
राती	:	रात्रि	अरचा	:	अर्चना, पूजा
सुहागा	:	सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आनेवाला एक क्षार द्रव्य	सरूप	:	स्वरूप

मंझन

QEFLN8

मंझन हिंदी के एक प्रसिद्ध सूफी कवि थे । इनके जीवन के संबंध में बहुत ही कम जानकारी प्राप्त है । अभी तक इनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' का ही पता चला है । यह कहना कठिन है कि इनकी और कोई अन्य रचना है या नहीं । 'मधुमालती' में मंझन ने अपने संबंध में थोड़ा बहुत संकेत किया है । 'मधुमालती' की रचना सन् 1545 में हुई । इससे इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि ईस्वी सन् की सोलहवीं शताब्दी के मध्य में वे वर्तमान थे । मंझन के काल आदि को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है । उनके धर्म, उनके निवास स्थान आदि के संबंध में नाना प्रकार के मत उपस्थित किए गए हैं ।

उनके निवास स्थान के संबंध में दो प्रकार के मत प्रकट किए गए हैं । मधुमालती की एक पंक्ति ''गढ़ अनूप' बस नग्र चर्नाढ़ी, कलयुग भो लंका जो गाढ़ी'' के आधार पर मंझन के निवास स्थान का अनुमान लगाया गया है । परशुराम चतुर्वेदी ने अनुमान किया है कि अनूपगढ़ मंझन का निवास स्थान रहा होगा या ''ढ़ी'' से अंत होने वाला नगर । किन्तु डॉ० शिवगोपाल मिश्र इससे सहमत नहीं हैं । उनके अनुसार चर्नाढ़ी मधुमालती काव्य के नायक मनोहर के पिता सूरजभान की राजधानी थी । अन्य साक्ष्यों के आधार पर चतुर्वेदी जी का ही मत सही जान पड़ता है ।

ऐसा प्रतीत होता है जैसे मंझन अपना निवास स्थान छोड़ दूसरी जगह रहने लगे थे । मधुमालती में अपने संबंध में कहा है – ''तब हम भो दोसर बासा, जबरे पितै छोड़ा कविलासा'' । मंझन ने अपने गुरु का नाम शेख महम्मद या गोस महम्मद बतलाया है लेकिन इससे अधिक अपने गुरु के संबंध में कुछ नहीं कहा है । और न ही अपनी गुरु परंपरा का ही जिक्र किया है । वैसे अपने गुरु के संबंध में उन्होंने इतना अवश्य कहा है कि वे सिद्ध पुरुष थे तथा उन्हीं की कृपा से उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त हुए ।

मंझन सूफी कवि थे । अतएव उन्होंने सूफियों की प्रेमपद्धति को ही अपनाया है । सूफियों का विश्वास है कि प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है । प्रस्तुत दोनों कड़बक (कड़बक एक छंद है जो दोहा और चौपाई से मिलकर बनता है ।) प्रेम के महत्त्व को ही उद्घाटित करते हैं । कवि के अनुसार प्रेम रूपी ज्योति से ही यह संसार प्रकाशमान है ।

(१)

पेम अमोलिक नग सयंसारा । जेहि जिअं पेम सो धनि औतारा ।
पेम लागि संसार उपावा । पेम गहा बिधि परगट आवा ।
पेम जोति सम सिस्टि अंजोरा । दोसर न पाव पेम कर जोरा ।
बिरुला कोइ जाके सिर भागू । सो पावै यह पेम सोहागू ।
सबद ऊँच चारिहुं जुग बाजा । पेम पंथ सिर देइ सो राजा ।

पेम हाट चहुं दिसि है पसरी गै बनिजौ जे लोइ ।
लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ।।

(२)

अमर न होत कोइ जग हारै । मरि जो मरै तेहि मींचु न मारै ।
पेम के आगि सही जेइं आंचा । सो जग जनमि काल सेउं बांचा ।
पेम सरनि जेइं आपु उबारा । सो न मरै काहू कर मारा ।
एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।
मिरितु क फल अंब्रित होइ गया । निहचैं अंमर ताहि कै कया ।

जौ जिउ जानहि काल भौ पेम सरन करि नेम ।
फीरै दुहुं जग काल भौ सरन काल जग पेम ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने प्रेम को संसार में अँगूठी के नगीने के समान अमूल्य माना है । इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए कवि के अनुसार प्रेम के स्वरूप का वर्णन करें ।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बताई है ?
3. 'पेम गहा बिधि परगट आवा' से कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है ?
4. आज मनुष्य ईश्वर को इधर-उधर खोजता फिरता है लेकिन कवि मंझन का मानना है कि जिस मनुष्य ने भी प्रेम को गहराई से जान लिया स्वयं ईश्वर वहाँ प्रकट हो जाते हैं । यह भाव किन पंक्तियों से व्यंजित होता है ?
5. कवि की मान्यता है कि प्रेम के पथ पर जिसने भी अपना सिर दे दिया वह राजा हो गया । यहाँ 'सिर देना' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
6. प्रेम से व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? पठित पदों के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।
7. सप्रसंग व्याख्या करें -
   ''पेम हाट चहुं दिसि है पसरीगै बनिजौ जे लोइ ।
   लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ।।
8. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें -
   (क) एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।
   (ख) मिरितु क फल अंब्रित होइ गया । निहचै अंमर ताहि कै कया ।
9. प्रेम में सर्वस्व समर्पण से व्यक्ति के निजी जीवन में आत्मिक सुंदरता आ जाती है, वह परिपक्वता कवि के विचारों में किस प्रकार आती है ? स्पष्ट करें ।
10. प्रेम की शरण में जाने पर जीव की क्या स्थिति होती है ?

कविता के आस-पास

1. कवि ने प्रेम के आदर्श स्वरूप की चर्चा की है । अन्य कवियों के इस तरह के कुछ पद संकलित कीजिए ।
2. क्या आज व्यक्ति प्रेम के इस आदर्श स्वरूप को स्वीकार कर रहा है ? समाज में आज प्रेम का कौन-सा स्वरूप मौजूद है ? अपने विचार व्यक्त करें ।
3. मंझन की पंक्तियों को यथासंभव कंठस्थ कर कक्षा में सुनाएँ ।
4. मंझन के समकालीन अन्य कवियों से संबंधित जानकारी शिक्षक की सहायता से एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   संसार, सिर, हाट, पंथ, प्रेम

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   ऊँच, अमृत, प्रगट, प्रेम, सिर
3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें –
   सबद, मिरितु, पेम, सिस्टि, दोसर, गाहक, अंब्रित

शब्द निधि

पेम	:	प्रेम
अमौलिक	:	अमूल्य
नग	:	बेशकीमती रत्न
जेहि	:	जिसको
जिअं	:	आत्मा, हृदय
धनि	:	धन्य
औतारा	:	अवतरण होना
उपावा	:	प्रकट होना
जोति	:	ज्योति
सिस्टि	:	सृष्टि
अंजोरा	:	प्रकाश
दोसर	:	दूसरा, अन्य
पाव	:	पाना
जोरा	:	जोड़ा
विरला	:	विरल
सोहागू	:	सौभाग्य
सबद	:	शब्द
चारिहु	:	चारों युग
पंथ	:	रास्ता
पसरीगै	:	फैल गया
बनिजै	:	वणिज, व्यापारी
लाहा	:	प्राप्त करना
डहकावै	:	भ्रमित करना
तेहि	:	उसको
मींचु	:	मृत्यु
आंचा	:	आँच, ताप
बांचा	:	बाँटना
सरनि	:	सीढ़ी, सोपान
आपु	:	स्वयं
बहुरि	:	पुनः
नियर	:	नजदीक
निहचैं	:	निश्चय
नेम	:	नियम, व्रत
फीरै	:	घूमना-फिरना, चलना
दुहुं	:	दोनों
भौ (भव)	:	संसार